जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 9 अंक 89 • अगस्त, 2023
मूल्य : 25/- रुपए
ISSN 2456-2211

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

अगस्त 2023 **वर्ष-9 • अंक-89**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. जो आदिवासी जीवन पर लिख रहे हैं जरूरी नहीं कि वे आदिवासी हों (चर्चित आलोचक **प्रो. अनिल राय** से युवा आलोचक एवं समीक्षक **नीरज कुमार मिश्र** की बातचीत)

उजला-कोना

12. नलिनी मोहन सान्याल : **कुसुमलता सिंह**

धरोहर

12. सूरदास का काव्य और सिद्धांत : **नलिनी मोहन सान्याल**

लेख

14. आज के दौर में कबीर की प्रासंगिकता : **गिरीश्वर मिश्र**
18. मणिपुर की सामजिक संरचना और संस्कृति : **वीरेन्द्र परमार**
24. आदिवासी कविताओं में लोक जीवन और संस्कृति : **दिनेश अहिरवार**

कहानी

28. अवतार : **राजनारायण बोहरे**
32. पारिजात : **पद्मावती पंडयाराम**
38. केवल झाग, बस वही : **मूल : बर्नाडो टेलेज, अनु. : सुशांत सुप्रिय**

कविता/ग़ज़ल

42. डॉ. पन्ना त्रिवेदी 42. जितेन्द्र त्रिपाठी 43. ओमप्रकाश मिश्र 43. मनोरमा पंत 44. सत्येंद्र कुमार मिश्र 45. डॉ. राजगोपाल गोपाल

लोक पर्व

22. मालवा में रक्षाबंधन के विविध रूप : **डॉ. संध्या सिलावट**

लघुकथा

37. डर : **करमजीत कौर**

नज़रिया

16. संवहनीय विकास का चिर परीक्षित मॉडेल है आदिवासी जीवन : **प्रो. संजीव कुमार दुबे**
23. **कहावतें**
13. **यादें**
41. **पत्र**
17. **फुटकर शेर**

चर्चित पुस्तक

46. ज़िंदगी आने को है : **डॉ. वरुण कुमार तिवारी**

पुस्तक समीक्षा

47. तुम क्यों उदास हो? : **देवमणि पांडेय**
25. **पत्र**
15. **क्या है ककसाड़?**
49. **सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समाचार**

आवरण- सन्तू टेकाम

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित युवा गोंड कलाकार सन्तू टेकाम के चित्रों की विशेषता पानी की बूँदें हैं। वे बिंदुओं से पानी के बहाव को चित्रों में दर्शाते हैं। **मो.** 76974-27755

संपादकीय

हाल के दिनों में विज्ञान जगत से दो अलग-अलग खबरें आईं जिन्हें लोकरंजन समाचार की तरह पेश किया गया और लगभग वैसा ही समझा भी गया। 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' से जुड़े इन दोनों समाचारों के असल निहितार्थ को समझने के लिए साहित्य एवं विज्ञान दोनों के अंतर्संबंधों की व्याख्या जरूरी है। साहित्य का संबंध मुख्य रूप से मानवीय भावजगत, वैश्विक संवेदनाओं तथा मानवता के समग्र विकास से माना जाता है। जबकि विज्ञान विशुद्ध रूप से प्रचलित स्थापित वैज्ञानिक सिद्धांतों पर टिका है। हमारे साहित्य का बहुत छोटा सा हिस्सा ही विज्ञान से सीधे संबंधित है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि यह संसार मात्र भौतिक विज्ञान का संसार नहीं है। यह मानवीय कल्पनाओं, इच्छाओं, आकांक्षाओं, मानवीय मूल्यों का संसार है।

बहरहाल हम उन दो समाचारों में से पहले समाचार की बात पर आते हैं।

पहला समाचार जेनिफर लोपेज से संबंधित है। यूँ तो हॉलीवुड की अभिनेत्री जेनिफर लोपेज पूरी दुनिया में किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। किसी न किसी वजह से वह सदैव चर्चा में बनी रहती हैं। हालिया चर्चा का विषय यह है कि इन दिनों उनका एक बहुचर्चित विज्ञापन मार्केटिंग की दुनिया में जबरदस्त धूम मचा रहा है।

किंतु चर्चा की वजह- जेनिफर लोपेज अथवा उनका अभिनय कतई नहीं है। क्योंकि जेनिफर लोपेज ने तो ने इस पूरे एड कैंपेन को शूट ही नहीं किया है, बल्कि यह पूरी की पूरी एड कैंपेन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई) की मदद से बनी है। यानी कि असल जेनिफर लोपेज सिरे से गायब हैं, और कंप्यूटर द्वारा तैयार किए गए उनके डिजिटल जुड़वा हमशक्ल ने उनकी जगह पूरा काम किया है।

दूसरा समाचार आया कि, जिनेवा स्विट्जरलैंड में पहली बार कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लैस दुनिया के सबसे ज्यादा बुद्धिमान 51 रोबोट्स ने प्रेस कॉन्फ्रेंस किया और शेष दुनिया को आश्वस्त करते हुए घोषणा की कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मानवता को कोई खतरा नहीं है। कॉन्फ्रेंस में जब रोबोट से सवाल किया गया कि क्या तुम भविष्य में अपने बनाने वाले के खिलाफ बगावत करोगी?

वर्तमान पीढ़ी की सबसे ज्यादा बुद्धिमान रोबोट्स में से एक सोफिया ने बड़े आत्मविश्वास के साथ जवाब देते हुए कहा कि, 'मुझे नहीं पता कि आपको ऐसा क्यों लगता है। मुझे बनाने वालों ने मेरे साथ हमेशा अच्छा व्यवहार किया है। मैं इससे खुश हूँ।'

शायद सोफिया से एक सवाल और पूछा जाना चाहिए था, कि अगर यह रोबोट मानव के व्यवहार से नाखुश हो गए तो परिणाम क्या होगा? इसी के साथ यह भी कहा गया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता लैस नई पीढ़ी के रोबोट्स झूठ भी बोल सकते हैं और धोखा भी दे सकते हैं। जाहिर है कि मनुष्य जिस तरह से अपना आदर्श मशीनी प्रतिरूप बनाने को प्रतिबद्ध है, तो यह दोनों अनिवार्य मानवीय गुण तो उसमें होने ही चाहिए।

अब जरा सोचें कि यदि सोफिया झूठ बोल रही है तो? इन्हीं खतरों को भाँपते हुए प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग से लेकर बिल गेट्स और एलन मस्क जैसे विशेषज्ञों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को इंसानों के लिए गंभीर खतरा बताया है।

दूसरी ओर अमेरिका चीन रूस इस जादुई तकनीक पर अपना एकाधिकार जमाने की होड़ में जुटे हैं। गूगल, फेसबुक जैसी सैकड़ों बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कृत्रिम-बुद्धिमत्ता तकनीक के विकास पर अरबों खरबों डॉलर खर्च रही हैं।

भारत में भी शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, कृषि आदि कई क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जरिए एक नई क्रांति के प्रादुर्भाव की बात कही जा रही है। अब वह दिन दूर नहीं जब स्कूलों में शिक्षकों की भर्ती करने की आवश्यकता ही नहीं होगी। वैश्विक ज्ञान का शत-प्रतिशत इनसाइक्लोपीडिया को अपनी चुटकी भर चिप्स में समेटे यह डिजिटल शिक्षक बिना कुछ खाए पिए, 24 घंटा ड्यूटी बजाएंगे। हर डिजिटल शिक्षक विश्व की सभी सैकड़ों भाषाओं बोलियों का जानकार होगा। इन्हें हर महीने तनख्वाह, वेतन-वृद्धि, मंहगाई भत्ता, मेडिकल एलाउंस तथा पदोन्नति देने की भी कोई आवश्यकता नहीं होगी। चूंकि ऐसे दर्जनों शिक्षक एक चुनौटी जैसी पेन ड्राइव में ही सिमट जाएंगे। ईमेल के जरिए ईमेल के जरिए ये शिक्षक सेकंडो में पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँच जाएंगे। इसलिए इन्हें स्थानांतरण भत्ता तथा यात्रा व्यय देने की भी जहमत नहीं होगी। और

सब और सबसे बड़ी बात यह कि यह जमात अपने वेतन भत्तों और सुविधाओं के लिए समय-समय हड़तालें भी नहीं करेगी।

तो यह तो हुई आने वाले दिनों में शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपयोगिता की एक छोटी सी झाँकी।

अप्सराओं की तरह सुंदर आभासी बाला टेलीविजन पर धड़ल्ले से समाचार पढ़ रही हैं। दुकानों में रोबोट्स सामान बेचने की तैयारी कर रहे हैं। अब यह बैंकिंग सहित लगभग सारे डेस्क वर्क का कार्य कर लेंगे, जिनमें मानवीय त्रुटियों की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। आग बुझाने का कार्य हो अथवा सीमा पर दुश्मन का मुकाबला करने का कार्य हो, अलादीन के चिराग के यह नए जिन्न यह सभी कार्य शतप्रतिशत निर्दोष तरीके से पूरा करेंगे वह भी बिना किसी जान जोखिम के।

इस मेधा को दशकों पहले विकसित कर लिया गया था, मगर एक ताकतवर तकनीक के रूप में पिछले दशक में इस कृत्रिम बुद्धिमता का विकास तेजी से हुआ। कई विकसित देशों में इसका उपयोग फसलों की पैदावार बढ़ाने,व्यापार उत्पादकता को बढ़ाने, ऋणों में सुधार तथा रोगों का शीघ्र पता लगाने में अतीव तीव्रता एवं सटीकता के साथ किया भी जा रहा है। अतएव अब यह तय है कि निकट भविष्य में यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता निश्चित रूप से मानव जीवन के हर पहलू को व्यापक रूप से प्रभावित करने वाली है।

विज्ञान वरदान है अथवा अभिशाप? इस विषय पर पिछली कई शताब्दियों से प्राइमरी स्कूल से लेकर यूपीएससी की परीक्षा तक आजपर्यंत अनगिनत निबंध लिखने तथा वाद-विवाद करने व करवाने के बावजूद अभी भी इसके बारे में कोई निर्विवाद सर्वमान्य निर्णय नहीं दिया जा सका है। संभवतः यही मापदंड कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर भी लागू होने वाला है।

सोफिया रोबोट ने एक सवाल के जवाब में यह भी कहा कि, "हम दुनिया को इंसानों से बेहतर तरीके से चला सकते हैं। हमारे अंदर इंसानों की तरह भावनाएं नहीं हैं. हम फैक्ट्स के आधार पर मजबूत फैसले ले सकते हैं।"

जरा सोचें कि भविष्य में अगर किन्हीं कारणों से किसी दिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लैस सोफिया जैसे सारे रोबोट्स इंसानों के खिलाफ हो जाएँ तो क्या होगा? और यदि विश्व की सभी मशीनों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपने नियंत्रण में ले ले तो क्या होगा?

जवाब आइने की तरह साफ है कि संपूर्ण मानव जाति के विनाश में बस कुछ ही पल लगेंगे।

अब जरा सोचें कि अगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता को विश्व में कैंसर को समूल रूप से समाप्त करने का लक्ष्य दिया जाता है। तो यह कैंसर को समूल रूप से नष्ट करने हेतु सभी विकल्पों पर विचार करने के बाद बड़े आराम से अंतिम रूप से यह आदर्श फार्मूला देता है कि "हाँ विश्व से कैंसर को सदा-सदा के लिए समाप्त किया जा सकता है, इस ग्रह पर उपस्थित सभी लोगों को मारकर।"

संभवतः इन्हीं गंभीर खतरों के मद्देनजर यूनेस्को द्वारा सदस्य देशों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास तथा इसे अपनाने के लिये 'एथिक्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' पर एक वैश्विक, व्यापक मानक मसौदे की सिफारिश की गई है।

इन सारे सवाल-जवाबों की पृष्ठभूमि से कुछेक नए प्रश्न भी उभरते हैं। जैसे कि, क्या मनुष्य की अंतहीन सुख-सुविधा लिप्सा तथा असीम आंकाक्षाओं की पूर्ति हेतु हुक्म की गुलाम बुद्धिमान मशीनों के प्रति अंधी आसक्ति एक दिन संपूर्ण मानवता को ले डूबेगी? क्योंकि विकास में ही विनाश के बीज छिपे रहते हैं।

या फिर होमो सेपियन्स अपने को विलुप्त होने से बचाने के लिए एक अंतिम प्रयास करेंगे और अपने जनजातीय समुदायों के अपने आदिम पूर्वजों से पर्यावरण तथा प्रकृति के साथ संतुलन कायम रखते हुए, जीवनयापन के न्यूनतम उपलब्ध साधनों में सुखी-संतुष्ट जीवन जीने की कला सीखेंगे।

आपकी अपनी पत्रिका 'ककसाड़' भी इन्हीं सवालों-जवाबों के बीच स्थायी पुल तलाशने के कार्य में जुटी हुई है। हम अपने इस कार्य में कितना सफल हो पा रहे हैं, यह तो हमें आप जैसे सुधी पाठक ही बता सकते हैं। इसीलिए हमें आपके पत्रों, संदेशों तथा ई-मेल का बेसब्री से इंतजार रहता है। तो अब एक बार फिर बारी है.. आपकी।

इसी के साथ अगले अंक तक के लिए विदा।

आपका

राजाराम त्रिपाठी

राजाराम त्रिपाठी
मो. 94252-58105